ओमशांति के अर्थ में टिकने से स्वर्णिम युग की स्थापना होगी : दादी रत्न मोहिनी जी

(रपट : बी.के.गिरीश, ज्ञानसरोवर)

ज्ञानसरोवर, आबू पर्वत, ०१ जून २०१३। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की एक शाखा शिक्षा प्रभाग द्वारा स्वर्णिम संसार के लिए दिव्य बुद्धि (डिवाइन विजडम) विषय पर महाविद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों के अध्यापकों के लिए एक अखिल भारतीय स्तर का सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्‌घाटन दीप प्रज्वलित करके किया गया।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने अपने आर्शीवचन इस प्रकार प्रदान किये। दादी जी ने कहा ओमशांति महाशब्द मात्र कोई शब्द नहीं है बल्कि इसका अर्थ महसूस करते हुए उस अवस्था में टिकने का प्रयत्न करते रहने की स्मृति यह शब्द हमें दिलाती है। आत्मा का निवास स्थान परमधाम में है। परमात्मा का भी निवास स्थान वही है। हम इस बात को नहीं जानते। कभी हमारा भारत स्वर्ग था। मगर आज नहीं है। स्वर्ग में हर ओर सत्य ही सत्य था। भारत भूमि पर ही हमारे पूज्य देवी देवताओं का निवास था। वहाँ आदि सनातन देवी देवता धर्म था जहाँ झूठ का नाम निशान तक नहीं था। अब फिर से वह स्वर्णिम युग आने वाला है। मगर कैसे आएगा? कौन लाएगा? सत्यता पर चलने से वह स्वर्णिम युग आएगा। परमात्मा गुप्त रूप से उस स्वर्णिम युग की स्थापना करा रहे हैं। परमात्मा से राजयोग की शिक्षा प्राप्त करके हम अपना जीवन सुखमय एवं शांत बना सकते हैं।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी मृत्युंजय भाई ने कहा कि कोटा विश्वविद्यालय एवं सोलन विश्वविद्यालय में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था ब्रह्माकुमारीज के द्वारा की जाएगी। विश्व में शांति न हो तो विश्व किस काम का? देश में संपन्नता न हो तो देश किस काम का? वह विश्वविद्यालय जो मनुष्य को दिव्य (देवता) बनाने की शिक्षा प्रदान न कर सके वह विश्वविद्यालय किस काम का? आपने बताया कि स्वर्गीय प्रधान मंत्री नरसिंहमाराव ने कहा था कि चरित्र निर्माण करने का कार्य यह संस्थान कर रही है। भारत सरकार ऐसा नहीं कर पाई। जीने का, सीखने का और कमाई करने का लक्ष्य यह है कि हमारा जीवन शांत मय, स्वस्थय एवं पवित्र बने। आज सभी का जीवन तनाव ग्रस्त हो गया है। यह उनकी अपवित्रता, अज्ञानता एवं असभ्यता का सूचक है। इसे समाप्त करने के लिए मन को परमात्मा के साथ संलग्न करने की आवश्यकता है। राजयोग की शिक्षा से हम ऐसा ही कर पाते हैं। राजयोग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यश्क है।

वर्द्धमान महावीर विश्वविद्यालय कोटा के कुलपति डॉं विनय कुमार पाठक ने कहा कि मैं कुलपति के नाते नहीं बल्कि एक आत्मा के नाते कहना चाहूंगा कि यह एक स्वर्णिम अवसर है। मुझे लगता है कि मौन के आधार पर काफी कुछ समझा जा सकता है। शब्द उतने कारगर नहीं होते। हमें करने के अहंकार से परे होना चाहिए। हम न तो अपने प्रथम श्वास को रोक सकते हैं और न ही अपने अंतिम श्वास से आगे की यात्रा कर सकते हैं। मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा एक महान शिक्षा है। हम भी अपने विश्वविद्यालय में एक वैल्यूज तथा आध्यात्मिकता का केंद्र अवश्य स्थापित करेंगे। मैं इस सम्मेलन की सफलता एवं सुफलता की कामना करता हूँ।

सोलन स्थित विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो प्रेम कुमार खोसला जी ने जानना चाहा कि आज हम कहाँ पहुँच गये हैं? आज गुरूओं की हमने क्या स्थिति बना दी है? पश्चिमी शिक्षा ने हमें आज इस स्थिति पर लाकर खड़ा कर दिया है। हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया। आज की माताएं बच्चों को कहाँ आध्यात्मिक शिक्षा दे रहीं हैं? आत्मा एवं शरीर का ज्ञान देने वाली यह विश्वविद्यालय नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय के ही समान है। मन को भटकने से रोकने

के लिए यह शिक्षा ही कारगर है। इस आध्यात्मिक शिक्षा के बिना हम नष्ट होते भारत को बचा नहीं पाएंगे। आज भारत की प्रतिष्ठा इसके योग आध्यात्म की वजह से ही है। हरित क्रांति की वजह से आज भारत सम्मानित है। इस प्रकार के फैसले लेने के लिए आध्यात्मिक बल की जरूरत होती है जो कि हमारी उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ले सकीं। वैचारिक शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। सात्विक विचारों को उत्पन्न करना सीखें। हमें विश्वास है कि हम सफल होंगे। मैं भी अपने विश्वविद्यालय में मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा प्रदान करने के लिए ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग से अनुरोध करता हूँ।

शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक राजयोगी डाँ हरीश शुक्ला जी ने सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यहाँ का ज्ञान आसानी से तो गले नहीं उतरता है मगर एक बार समझ में आ जाए तो जीवन में दैवी बदलाव आने लगता है। मैं ने अपने बच्चों के बदलते आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित होकर इस ज्ञान को गहराई से आत्मसात करने की सोची। मेरे बच्चे ही मेरे आध्यात्मिक गुरु बने। स्वयं परमात्मा धरा पर आकर यह ज्ञान सुना रहे हैं- इस बात की अनुभूति में मुझे वक्त तो लगा मगर मैं इसे समझ पाया। यह मेरा परम सौभाग्य रहा। शुभकामना है कि आप सभी भी इस सच्चाई को हृदयंगम करके जाएं।

शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका राजयोगिनी शीलू बहन ने बताया कि राजयोग के द्वारा हम मात्र अपने मन पर ही विजय पाप्त नहीं करते बल्कि विश्व की आत्माओं के हृदयों को भी जीतते हैं। यह देश जल्दी ही स्वर्णिम युग में परिवर्तित होगा। हमारा भारत सदैव आज जैसा नहीं था बल्कि यह एक सोने की चिड़िया के समान था। शास्त्रों में इसकी चर्चा हम पढ़ते हैं। तब वह भारत हमें याद आता है। दुःख भी होता है। मगर हम अपने मन में आशा की किरणों को आने दें क्योंकि वह परमात्मा के आर्शीवाद से अब आने ही वाला है। स्वर्णिम भारत की क्या विशेषताएं थीं? वहाँ चार प्रकार का सुख था। तन का मन का और धन तथा संबंधों का भी सुख था। चाहना है कि वह फिर से आए। मगर कैसे? यह एक बड़ा प्रश्न है। कहा गया है कि प्रत्येक पापी का एक भविष्य भी है। भविष्य में वह बदल सकता है। मगर इसके लिए उसे अपनी भौतिकवादी वृत्ति को बदलना होगा। आध्यात्मिकता को अपनाकर वह देवत्व को प्राप्त कर सकता है। अभी किये गये सतकर्मों का फल हम आनेवाले जनमों में प्राप्त करेंगे। खुद को भूलने से ही हमने परमात्मा को भी भुला दिया है। इसे समझें और अपने जीवन को बदलें। अभी नहीं तो कभी नहीं। निराशा की कोई बात नहीं है क्योंकि परमात्मा का अवतरण हो चुका है और विगत ७७ वर्षों से वे इस नारकीय सृष्टि को स्वर्णिम संसार में रूपांतरित करने का महान कार्य करा रहे हैं। शीलू बहन ने सम्मेलन में पधारे अध्यापकों को आत्मानुभूति भी कराई।

मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा से संबंधित प्रभाग के निदेशक बी के पांडयामणि ने बताया कि यह शिक्षा अनेक विश्वद्यिालयों में प्रदान की जा रही है। उन्होंने अतिथियों का आभार प्रदर्शन भी किया।

ब्रह्माकुमारी सुमन बहन ने सम्मेलन में मंच का संचालन किया। उन्होंने जीवन को कॉफी के समान बताया और कप को वह भौतिकवाद जिसके पीछे आज सारा संसार भाग रहा है। कॉफी सुंदर स्वादिष्ट हो इससे अधिक कप चमकदार हो, लोग यह चाहते हैं।